प्रातः क्लास 20-11-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं रूहानी बच्चे याद की यात्रा बैठे हुये हो। अन्दर में यह ज्ञान है ना हम आत्माएं याद की यात्रा पर हैं। यात्रा अक्षर तो जरूर दिल में आना चाहिए। जैसे वह यात्राएं करते हैं हरद्वार, अमरनाथ जाते हैं, यात्रापूरी कर फिर लौटकर आते हैं। यहां तुम बच्चों की बुधि में है हम जाते हैं शान्तिधाम। बाप ने आकर हाथ पकड़ा है। हाथ पकड़कर पार ले जाना होता है ना। कहते भी हैं हाथ पकड़ लो। क्योंकि विषय सागर में पड़े हैं। अभी तुम शिव बाबा को याद करो और घर को याद करो। अन्दर में यह आना चाहिए कि हम जा रहे हैं। इसमें मुख से कुछ बोलना नहीं है। अन्दर में सिर्फ याद रहे बाबा आया हुआ है लेने लिये। याद की यात्रा पर जरूर रहना है। याद की यात्रा से ही तुम्हारे पाप कटते हैं तब ही फिर उस मंजिल पर पहुंचेंगे। कितना क्लीयर बाप समझाते हैं। जैसे छोटे बच्चों को पढ़ाया जाता है ना। सदैव बुधि में यह ही हम बाप को याद करते जा रहे हैं। बाप का काम ही है पावन बनाकर पावन दुनिया में ले जाना। रूहानी बच्चों को ले जाते हैं। आत्मा को ही यात्रा करनी है। हम आत्माओं को बाप को याद कर घर जाना है। घर पहुंचे। फिर बाप का काम पूरा हुआ। बाप आये ही हैं पतित से पावन बनाकर घर ले जाने। पढ़ाई तो यहां ही पढ़नी है। चल घूमो फिरो कोई भी काम काज करो बुधि में यह याद रहे। योग अक्षर में यात्रा सिध नहीं होती। योग अक्षर ही सन्यासियों का है। वह तो सभी है मनुष्य की मत। योग अक्षर मनुष्यों की मत है। बच्चों को समझाया ना एक है मनुष्य मत दूसरी है ईश्वरीयमत। आधा कल्प तुम मनुष्य मत पर चलते हो। आधा कल्प देवी मत पर चले हो। अभी तुमको मिलती है ईश्वरीयमत। योग अक्षर नहीं कहो। याद की यात्रा। आत्मा को यह यात्रा करनी है। वह होते हैं जिसमानी यात्रा। शरीर के साथ जाते हैं। इसमें तो शरीर का काम ही नहीं। आत्मा जानती है हम आत्माओं का वह स्वीट घर है। बाप हमको शिक्षा दे रहे हैं जिससे ही हम पावन बनेंगे। याद से तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह है यात्रा। हम बाबा की याद में बैठते हैं। क्योंकि बाबा पास ही जाना है। बाप पावन बनाते हैं बाप आये ही हैं पावन बनाने सो तो पावन दुनिया में जाना ही है। बाप पावन बनाते हैं फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तुम पावन दुनिया में जावेंगे। यह ज्ञान बुधि में रहना चाहिए। हम याद की यात्रा पर हैं। हमको फिर इस मृत्युलोक में लौटना नहीं है। बाबा का काम है हमको घर तक पहुंचाना। बाप रास्ता बता देते हैं। अभी तुम मृत्युलोक में हो। फिर अमरलोक नई दुनिया में होंगे। बाप लायक बनाकर ही छोड़ते हैं। सुखधाम में यह नहीं ले जावेंगे। उनकी लिमिट हो जाती है। घर तक पहुंचाना है। यह सारा ज्ञान बुधि में रहना चाहिए। सिर्फ याद नहीं करना है। साथ में ज्ञान भी चाहिए। ज्ञान से ही तुम धन कमाते हो ना। इस सृष्टि के चक्र की नालेज से तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो। बुधि में यह ज्ञान है हमने चक्र लगाया है फिर हम घर जावेंगे। फिर नये सिरे चक्र शुरू होगा। यह सारा ज्ञान बुधि में रहे तब खुशी का पारा चढ़े। बाबा को भी याद करना है। शान्तिधाम सुखधाम को भी याद करना है। बाप यह दोनों वरसा देते हैं। शान्तिधाम और सुखधाम जाना है। ऐसे नहीं सिर्फ शिव बाबा को याद करना है। 84 का चक्र अगर या नहीं करेंगे तो चक्रवर्ती राजा कैसे बनेंगे। सिर्फ एक को याद करना तो सन्यासियों का काम है। सिर्फ वह उनको जानते नहीं हैं। ब्रह्म को ही याद करते हैं। बाप तो अच्छी रीत बच्चों को समझाते हैं। याद करते2 ही तुम्हारे पाप कट जाती है। पहले तो घर जाना है। यह है रूहानी यात्रा। गायन भी है चारों तरफ लगाये फेरे फिर भी हरदम दूर रहे हैं अर्थात बाप से दूर रहे। जिस बाप से बेहद का वरसा मिलता है। उनको तो जानते ही नहीं। कितने चक्र लगाये हैं। हर वर्ष भी कईयात्रा करते हैं। पैसे बहुत होते हैं तो यात्रा का शौक रहता है। यह तो तुम्हारी है रूहानी यात्रा। तुम्हारे लिये नई दुनिया बन रही है। फिर तुम नई दुनिया में हो आने वाले हो जिसको अमरलोक कहा जाता है वहां काल होता नहीं जो किसको ले जाये। काल को हुकुम ही नहीं है नई दुनिया में आने का। रावण की

यह पुरानीदुनिया है। तुम बुलाते भी हो यहां आओ। बाप कहते हैं मैं पुरानीदुनिया औरपुराने शरीर में आता हूं। इसने ही पूरे 84 जन्म लिये हैं। मैं पतितों को ही पावन बनाने आता हूं। तुम पावन बनकर फिर औरों को भी बनाते हो। सन्यासी तो भाग जाते हैं। एकदम गुम हो जाते हैं। पता ही नहीं पड़ता है कहां चला गया। क्योंकि वह ड्रेस ही बदल देते हैं। पुलिस को भी सन्यासी ड्रेस मेंसा० आई०डी० रखनी पड़ती है। जैसे स्पर्ट्स रूप बदलते हैं कब भेल से फ्रेंच बन जाते हैं, कब फ्रेंच से भेल बन जाते हैं। यह भीचोरों को पकड़ने लिये रूप बदलते हैं। सतयुग में थोड़ेही ऐसी बातें होंगी। यह है छी2 दुनिया। बाप कहते हैं हम आते हैं फिर नई दुनिया बनाने। फिर ड्रामा प्लैन अनुसार जब द्वापर शुरू होताहै तो देवतायें वाममार्ग में चले जाते हैं। उन्हों के बहुत गंदे चित्र भी हैंजगतनाथ का मंदिर है उनमें उनके गंदे चित्रहैं। यूं तो उनकी राजधानी थी। जो खुद विश्व का मालिक था. वह फिर मंदिरमें जाकर बन्द हुआ है। उनका काला मुंह दिखाते हैं। इसी जगतनाथ के मंदिर पर तुम बहुत समझा सकते हो। और कोई इनका अर्थ नहीं समझते हैं। देवतायें ही पूज्य से पूजारी बनते हैं। वह लोग तो हर बात में भगवान के लिये कह देते आपेंही पूज्य आपेंही पूजारी ... आपही सुख देते हो आपेही दुख देते हो। बाप कहते हैं मैं किसको भी दुःख देता नहीं हूं। यह तो समझ की बात है। बच्चा जन्मा तो खुशी होगी। बच्चा मर गया तो रोने लग पड़ेंगे। भगवान ने दुःख दिया। अरे यह अल्पकाल का सुख दुःख तुमको रावण राज्य में मिलता है। मेरे राज्य में दुःख की बात ही नहीं। सतयुग को कहा ही जाता है अमरलोक। इनका नाम ही है मृत्युलोक। अकाले मर पड़ते हैं। वहां तो बहुत खुशी मनाते हैं। आयु भी बड़ी होती है। बड़े में बड़ी आयु 150 की होती है। यहां भी कब कब कोई हीरे की ऐसी होते है। परन्तु यहां स्वर्ग तो नहीं है ना। कोई शरीर को बहुत सम्भाल से रखते हैं तो आयु बड़ी हो जाती है। फिर पीढ़ी कितने हो जाते हैं। परिवार बढ़ता जाता है। वृध्धि जल्दी हो जाती है। जैसे झाड़ से टास्टारियां निकलती है, 50टारियां निकलेंगी फिर उनसे और 50निकेंगी। कितना वृध्धि को पाते जाते हैं। यह भी ऐसे है। इसलिये इनका मिसाल बड़ के झाड़ से देते हैं। सारा झाड़ खड़ा है। बाकी आदि सनातन देवी देवता धर्म का फाउन्डेशन है नहीं। देवतायें कब थे। वह तो लाखों वर्ष कह देते हैं। आगे कब तुम कब ख्याल भी नहीं करते थे। बाप ही आकर यह सभी बातें समझाते हैं। तुम अभी बाप को भी जान गये हो। और सारे ड्रामा के आदि मध्य अन्त को भी जान गये हो। दुनिया नई से पुरानी, पुरानी से नई बनती है कैसे है यह कोई भी नहीं जानते।

अभी तुम बच्चे याद की यात्रा में बैठे हो। यह यात्रा तो तुम्हारा नित्य चलनी है। घूमो फिरो परन्तु इस याद की यात्रा में रहो। यह है रूहानी यात्रा। तुम जानते हो भक्ति मार्ग में हम भी उन यात्राओं पर जाते थे। बहुत बार यात्रा की होगी जो पक्के भक्त होते हैं। बाबा ने समझाया है एक शिव की भक्ति करना वह है अव्यभिचारी भक्ति। फिर देवताओं की होती है फिर 5तत्वों की भी भक्ति करते हैं। देवताओं की भक्ति फिर भी अच्छी है। क्योंकि उन्हों का शरीर फिर भी सतोप्रधान है। मनुष्यों का शरीर तो पतित है ना। वह तो पावन है। फिर द्वापर से लेकर सभी पतित बन पड़ते हैं। नीचे गिरते आते हैं। सीढ़ी का चित्र तुम्हारे लिये बहुत अच्छा है समझाने का। जीन की भी कहानी बताते हैं ना। यह सभी दृष्टान्त आदि इस समय के ही हैं। तुम्हारे ऊपर ही बने हुये हैं। भ्रमरी का मिसाल भी तुम्हारा है। तुमकीड़ों को आप समान ब्राह्मण बनाते हो। यहां के ही सभी दृष्टान्त हैं। वह सन्यासी लोग फिर कापी करते हैं। बाप समझाते हैं वास्तव में उन्हों को कोई कापी करने का भी हक नहीं है। शास्त्रपढ़ने का भी हक नहीं। उन्हों का निवृति मार्ग ही अलग है। यात्रा पर भी जाते हैं तो एक ब्राह्मण गाईड ले जाते हैं। सन्यासी कोई ब्राह्मण नहीं हैं। यात्रा हमेशा ब्राह्मण लोग करते हैं। सि= जिसमानी यात्रा तुम भी करते थे। अभी फिर बाप द्वारा रूहानी यात्रा सीखते हो। वह ब्राह्मण ही नहीं। परन्तु आजकल वह घुस पड़े हैं। बाबा तो सभी क्लीयर कर देते हैं कि कायदा क्या कहता है। कायदे को ज्ञान का

20-11-62

जाता है। कायदे को भक्ति नहीं कहा जाता। यह तो पढ़ाई है ना। भक्ति ऐसे कहा2 नहीं गया है। दिखाई ही न रहा है। जिसके आगे जाते हैं माथा टेकते ही रहते हैं। एक के भी आक्युपेशन को नहीं जानते। हिसाब किया जाता है ना। सबसे जास्ती जन्म कौन लेते हैं फिर कम होते जाते हैं। यह ज्ञान अभी तुमको मिलता है। मनुष्य तो है ही वैसमझ। कल्प की आयु लाखों वर्ष कह देते हैं। जब कि क्रिश्चन की 2000 वर्ष पूरी होनी है वह खुद ही कहते हैं क्राईस्ट से 3000 वर्ष पहले पैराडाईज था। तो जरूर नई दुनिया होगी। वह लोग कहते हैं परन्तु उनको भी समझाने वाला चाहिए। तुम समझते हो बरोबर स्वर्ग था। भारतवासी तो इतने पत्थर बुधि बने हैं उनसे पूछो स्वर्ग कब था तो लाखों वर्ष कह देंगे। उन लोगों की तो फिर भी बुधि अच्छी है। वह बिल्कुल सतोप्रधान भी नहीं बनते तो तमोप्रधान भी इतने नहीं बनते हैं। न बहुत सुख न बहुत दुःख ही पाते हैं। यहां तो कितना दुःख है। अभी तुम बच्चे समझते हो हम विश्व के मालिक थे, कितने सुखी थे। अभी फिर हमको ही बेगर टू प्रिन्स बनना है। दुनिया नई सो पुरानी होती है ना। तो बाप कहते हैं मेहनत करो। यह भी जानते हैं माया घड़ी2 भूला देती है। बाप समझाते हैं बुधि में यह सदैव याद रखो हम जा रहे हैं। हमारा इस पुरानी दुनिया से लंगर उठा हुआ है। नईया उस पार जानी है। गाते हैं ना नईया मेरी पार लगाओ। कब पार जाने का है वह भी नहीं जानते। तो मुख्य है याद की बात। बाप के साथ वरसा भी याद आना है। वे बच्चे वालग होते हैं तो फिर बाप का वरसा ही नजर में रहता है। तुम तो बड़े हो ही। आत्मा झट जान लेती है बात तो बरोबर है। बेहद के बाप का वरसा है ही स्वर्ग। बाबा स्वर्ग की स्थापना करते हैं तो बाप की श्रीमत पर चलना पड़े। बाप कहते हैं पवित्र जरूर बनना है। पवित्रता के कारण ही झगड़े होते हैं। वह तो बिल्कुल ही जैसे रौरव नर्क में पड़े हैं। और ही जास्ती विकर्म में गिरते चले पड़ते हैं। इसलिये बाप से प्रीत रख नहीं सकते। विनाश काले विपरीत बुधि है ना। बाप आते हैं प्रीत बुधि बनाने। बहुत हैं जिनकी रिचक भी प्रीत बुधि नहीं है। बाप को कब याद भीनहीं करते हैं। ऐसे भी हैं। बाबा नाम यहां नहीं बता सकते हैं। प्राईवेट में बता देंगे। कौन हैं जो शिव बाबा को जानते ही नहीं मानते ही नहीं हैं। माया का पूरा ग्रहण लगा हुआ है। याद की यात्रा बिल्कुल है नहीं। समझते हैं ब्रह्मा ही समझाते हैं। बाकी सभी गप्पे मारते हैं। ऐसे भी ढेर समझने वाले हैं। बाप मेहनत तो करते हैं, यह भी जानते हैं सूर्यवंशी चन्द्रवंशी राजधानी यहां स्थापन हो रही है। सतयुग त्रेता में कोई भी धर्म स्थापक नहीं होते हैं। राम कोई धर्म स्थापन नहीं करते हैं यह तो स्थापना करने वाले बाप के द्वारा यह बनते हैं। और धर्म स्थापक और बाप की धर्म स्थापना में रात दिन का फर्क है। बाप आते ही हैं संगम पर। जबकि दुनिया को बदलना है। बाप कहते हैं कल्प2, कल्प के संगम युगे पर मैं आता हूं। उन्हों ने फिर युगे2 अक्षर रांग लिख दिया है। आधा कल्प भक्ति मार्ग भी चलना है। भक्ति मार्ग में ही रावण राज्य। झूठ ही झूठ। भक्ति मार्ग के झूठी शास्त्र पढ़ते2 नीचे ही उतरते आये हैं। तो बाप कहते हैं बच्चे इन बातों को भूलो अब। यह कब मुख से नहीं निकलना चाहिए बाबा हम आप को भूल जाते हैं। और बाप को तो जानवर भी नहीं भूलते। तुम क्यों भूलते हो। अपने को आत्मा नहीं समझते हो। देहअभिमानी बनने से ही तुम बाप को भूलते हो। अभी जैसे बाप समझाते हैं वैसे तुम बच्चों को भी टेव रखनी है। मुझको मेरा बाप कहना चाहिए। ऐसे नहीं बड़े आदमी के आगे तुम पंक्ष हो जाओ। तुम कुमारियां हीबड़े2 विद्वानों पंडितों के आगे जाती हो। शंकराचार्य क्या है। तमोप्रधान तो सभी हैं ना। यह है ही तमोप्रधान दुनिया। तो तमोप्रधान मनुष्यों का ही मान है। तमोप्रधान मनुष्य, तमोप्रधान का ही मान रखेंगे। उनको यह पता नहीं है तुम अभी सतो सतोप्रधान बन रहे हो। तुम कितना भी समझाओ कब बुधि में बैठेगा ही नहीं। कहेंगे फिर समय लेकर समझेंगे। ऐसे2 करते2 समय ही पूरा हो जावेगा। उन्हों को बाप से प्रीत रखनी नहीं है। इसलिये गायन है कौरवों की विपरीत बुधि। पाण्डवों की है प्रीत बुधि। तुम यह रूहानी यात्रा सिखलाने वाले पण्डे हो।---

बुधि में यह याद है हम अभी शांतिधाम सुखधाम जा रहे हैं। यहां से पहले हम शान्तिधाम जावेंगे। फिर हम सुखधाम में आवेंगे। इसलिये समझाया जाता है बाप को याद करो। यह यात्रा करो तो सुखधाम में चले जावेंगे। इस दुःखधाम को भूल जाना है। यह है बेहद का सन्यास। यहां तो सभी तरफ दुःख ही दुःख है। पहले नम्बर में तो तुम दुःखी थे। भारत ही सुखधाम था अब भारत ही दुःखधाम बना है। भारत अविनाशी खण्ड है। क्योंकि अविनाशी बाप की यहां पधारणी होती है। यह खण्ड कब विनाश नहीं होता है। जबसतयुग है तो और कोई खण्ड होता ही नहीं सिवाय भारत के। बाप की भी यहां ही पधारणी होती है। उन्होंनेतो परमात्मा को ठिक्कर भित्तर में डाल दिया है। इसलिये बाप समझाते हैं भक्ति में है ही दुर्गति। ज्ञान से सर्व की सदगति होती है। सदगति दाता है हीज्ञान सागर बाप। बाप कहते हैं मैं कब मनुष्य बनता नहीं हूं। मैं तुम्हारे बुलावे पर आया हूं पतितों को पावन बनाने। भल बुलाते हैं परन्तु उस प्रेम से नहीं बुलाते हैंक्योंकि किसको पता नहीं है। गांधी भी गाते थे पतित-पावन .... फिर कह देते थे रघूपति राघव राजा राम। कितना गांधी का नाम है अभी भी। उनको 20 वर्ष हुआ होगा। अगर शुरू से पुजारी होगा तो निकल आवेगा। कोई भिन्न नाम रूप में होगा। ज्ञान लेता होगा अगर शुरू का पुजारी होगा तो। बाप आकर नालेज देते हैं पतित से पावन बनने की। गांधी फिर भी अच्छा था। उनके कर्म अच्छे थे। आगे चल शायद ऐसे2 जो मुख्य हैं उन्हों का पता पड़ जावेगा। बाकी इन बातों से हमारा कुछ फायदा नहीं है। तुम्हारी मुख्य बात है याद की यात्रा। रात दिन जितना हो सके बाप को बहुत प्यार से याद करनाहै। मोस्ट लवली बाप है। पति को अभी मोस्ट लवली नहीं कहेंगे। वह तो और ही बड़ा दुश्मनहै। सभी एक दो के दुश्मन बनते हैं। अभी तुम फिर एक दो के मित्र बनते हो। सभी से मित्रता करते हो। यही सभी को कहते हो बाप को याद करो तो बेड़ा पार हो। तुम्हारा और कोई दुश्मन है नहीं। यह रावण ही है जिस पर जीत पानी है योगबल से। बाकी इसमें कोई स्थूल हथियार आदि की बात नहीं है। जैसे विष्णु को चार भुजायें दिखाते हैं वैसे देवियों आदि के भी हथियार आदि दिखाये हैं। विष्णु को स्वदर्शनचक्र, गदा शंख आदि देते हैं। यह अलंकार वास्तव में है तुम्हारी। यह ज्ञान की बातें हैं। बाकी सतयुग में कोई गदा आदि होते ही नहीं। यहां राजाओं पास पहरा होता है तो ऐसे हथियार हाथ में रहते हैं। वहां हथियार आदि होते ही नहीं।

बाप फिर मुख्य बात कहते हैं बाप को याद करो। और कोई भी प्रश्न आदि में पूंछो नहीं। एक शिव बाबा को ही याद करना है। बाबा शान्तिधाम तक साथ रहेंगे। सुखधाम तक नहीं रहेंगे। बच्चों को भी बहुत शांत रहना है। हर बात शांति से करनी है। लड़ाई झगड़े की बात ही नहीं। वह भी समय आवेगा जो किंचन में भी मुंदी रहेंगे। तुमको तो बहुत सूक्ष्म में जाना है। मूंदी में बात करने से क्रोध की निशानी नहीं रहती।

तुम्हारी है ही रूहानी यात्रा। यह कोई धक्का खाने का यात्रा नहीं है। बुधि में शांतिधाम याद है। सुखधाम याद है और 84 जन्म भी याद है। बाबा को याद है तब बच्चों को समझाते हैं। उठते-बैठते बुधि में यह याद हो हम कैसे 84 का चक्र लगाते हैं। उसमें सभी आ जाता है। कदम2 पर सेकण्ड2 पर ड्रामा पक्का याद रहना चाहिए। परमार्थ भी करते रहना चाहिए। और यह ड्रामा भी पक्का याद करना चाहिए। तो फिकरात नहीं रहेंगी। सभी को कोई मरता है तो कहेंगे आत्मा गई। कुछ हो नहीं सकता। कहते हैं दुध जो निकला, थन में वापस जा नहींसकता। आत्मा भी फिर इस पुरानी दुनिया में आ नहीं सकती। कब कब कहते हैंश्मशान में मूर्दा भी जाग पड़ा। वह आत्मा कहां छिपी रहती है। ऐसा कोई इतफाक हो जाता है। फिर कितना खुश हो जाते हैं। एक है भी सुख और दुःख का खेल। सतयुग में कोई भी प्रकार का दुःख नहीं होता। ड्रामा के प्लैन अनुसार समय पर आत्मा शरीर देती है। आत्मा इनडिपेन्डेन्ट बन जाती है। तो शक्तिवान कौन ठहरा। ईश्वर या ड्रामा? दुनिया में ड्रामा को कोई भी नहीं जानते। वह कहेंगे ईश्वर ही शक्तिवान है तुम कहेंगे ड्रामा। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को याद प्यार गुड मार्निंग आरनमस्ते।